मन्द्राभिभृतिरित्यन्वाकशेषणेति। पाठस्त। "मन्द्राभिभू-तिः केतुर्यज्ञानां वाक्। श्रमावेहि॥२॥ श्रम्धा जाग्टविः प्राणः। त्रमावेहि। बधिर त्राक्रन्द्यितर्पान। त्रमावेहि। त्रहस्तोस्ता चनः। त्रमावेहि। त्रपादाश्रो मनः। त्रमावेहि। कवे विप्रचित्ते श्राच। श्रमावेदि॥ ३॥ सुइसः सुवासाः। ग्रूषा नामास्यस्तो मर्त्येषु। तं लाइन्तया वेद। श्रमावेदि। श्रिमें वाचि श्रितः। वाग्घदये। इदयं मिय। श्रइमस्ते। त्रमृतं ब्रह्मणि। वाय्में प्राणे त्रितः॥ ॥ प्राणा इदये। इदयं मिय। श्रहमस्ते। श्रम्तं ब्रह्मणि। स्र्या मे चन्ष श्रितः। चनुर्हदये। हृदयं मिथि। श्रहमसृते। श्रमृतं ब्रह्म-णि। चन्द्रमा मे मनिम त्रितः॥ ५॥ मनो इदये। इदयं मिय। त्रहमस्ते। त्रस्तं ब्रह्मणि। दिशो मे श्रोचे त्रिताः। श्रोवर् इदये। इदयं मिय। श्रहमस्ते। श्रस्तं ब्रह्मणि। त्रापा मे रेतिस त्रिताः॥ ६॥ रेता इदये। इदयं मिय। श्रहमस्ते। श्रम्तं ब्रह्मणि। पृथिवी मे श्ररीरे श्रिता। श्ररी-रू इदये। इदयं मिय। श्रहमस्ते। श्रस्तं ब्रह्मणि। श्रीषधिवनस्पतया मे लामसु श्रिताः॥ ७॥ लामानि इद-ये। इदयं मिय। अइमस्ते। अस्तं ब्रह्मणि। इन्हां मेवले त्रितः। बल् इदये। इदयं मिय। त्रहमसते। त्रस्तं न-ह्मणि। पर्जन्या मे मूर्ड्नि श्रितः॥ म् ॥ मूर्ड्या इदये। इदयं मिथ। श्रहमति। श्रस्तं ब्रह्मणि। ईग्राना मे मन्या श्रितः। मन्यर्द्ये। इदयं मिय। श्रहमस्ते। श्रस्तं ब्रह्मणि। श्रात्मा